

— अग्र्या, partic. °कृत von der Aufforderung betroffen: °कृते चमते ÇĀKH. Çr. 13, 12, 15. KĀTJ. Çr. 25, 11, 33.

— समुपा Jmd (acc.) zufriedenstellen (?) MBu. 1, 7765. West. reddere (c. acc. pers.).

— न्या zurückhalten: पुनरेना नि वर्तय पुनरेना न्या कुरु RV. 10, 19, 2.

— निरा 1) absondern, ausscheiden: कृशानामवलानां चतुःशता गा निराकृत्य KĀND. Up. 4, 4, 5. — 2) von sich stossen, abstossen, verdrängen, verstossen: याश्चयवत्ते ऽम्बरात्ताराः काले काले निराकृताः R. 5, 13, 31. न हि ते (रात्रानो रात्रयुत्राश्च) ऽप्युपशान्यन्ति निकृता वा निराकृताः MBu. 3, 1405. शत्रुनिराकृत 15082. R. 2, 8, 37. 3, 42, 41. 4, 8, 9. BHATT. 6, 100. भार्या MBu. in BENF. Chr. 8, 27. 48, 2. R. 1, 49, 3. ad ÇĀK. 135. — 3) abwehren, vereiteln: (शापाः) वरदाननिराकृताः MBu. 1, 7666. निराकृतान्योत्तर (eine Rede) welche jede Antwort darauf vereitelt, unwiderleglich H. 67. — 4) von sich fern halten, unterlassen: निराकृतनिमेषाभिर्नित्रपङ्क्तिभिः ad ÇĀK. 25, 7. — 5) verwerfen, nicht anerkennen: निराकरोतु वेदंश्च यस्ते कुरति पुष्करम् MBu. 13, 4573. शास्त्रकृद्भिर्निराकृतम् Citat im Vedāntas. in BENF. Chr. 215, 17. — 6) निराकृत abgeschieden von, ermangelnd; am Ende eines comp.: द्यौर्भानुशीतामृनिराकृता BHATT. 2, 19. — निराकृत = प्रत्याध्यात AK. 3, 1, 40. H. 1473. — Am Ende eines comp. in gleichem Casusverhältniss mit श्रेणि u. s. w. gaṇa कृतादि zu P. 2, 1, 59.

— पर्या umwenden: पर्याक्रियमाणा, पर्याकृता AV. 12, 3, 33. — desid. अमृता वा उत्तरतः पृथिवीं पर्याचिकीर्षतः TS. 6, 3, 2.

— व्या 1) sondern, scheiden, zertheilen: दृता दृता व्याकरं खिले गा विठिता इव AV. 7, 113, 4. व्याकरामि कृविषाकृतैः 12, 2, 32. स्थशो जन्मनि सविता व्याकः RV. 2, 38, 8. VS. 19, 77. TS. 6, 4, 3. मातृणामेका वत्सेन व्याकृत्य vom Kalbe trennend ÇĀT. Br. 1, 7, 4. 4. देवं चैवैतन्मानुषं च व्याकरोति 3, 2, 2. 16, 3, 1. 13, 4, 1, 2. 5, 8, 12. तन्नामद्वयान्यामेव व्याक्रियत sonderte sich nach Namen und Gestalt 14, 4, 2, 15. नामद्वये व्याकरवाणि KĀND. Up. 6, 3, 2. येन वा गन्धानान्निप्रति येन वाचं व्याकरोति Ait. Up. 3, 1. अत्र्याकृत ungesondert, ungetheilt ÇĀT. Br. 14, 4, 2, 15. Ind. St. 1, 298. Buṅ. P. 3, 11, 37. — 2) auseinandersetzen: वक्तव्यं चैव यत्र तद्वान्व्याकरोतु नः R. 5, 36, 5. किं वाकार्युर्द्वादशब्दे व्यतीति तन्मे सर्वभगवान्व्याकरोतु MBu. 3, 17218. न चेत्प्रश्नान्पृच्छतो व्याकरोपि 17315. — Vgl. व्याकरण, व्याकार, व्याकृति.

— समा 1) zusammenbringen, verbinden: सं जास्पत्यं सुयम्मा कृणुष्व RV. 5, 28, 3. सं वा मनसि सं व्रता समु चित्तान्याकरम् VS. 12, 58. सं सृष्टं धर्ममुभयं समाकृतम् RV. 10, 84, 7. — 2) zusammentreiben, eintreiben: गोसहस्रम् Ait. Br. 5, 14. RV. 3, 36, 5. — 3) zurechtmachen, in Stand setzen, conficere: समाकृणोषि जीवसे RV. 10, 23, 6. AV. 6, 141, 1. समाकृर्वाणः प्ररुहे रुरुश्च 13, 1, 8.

— उपसमा vereinigen ÇĀT. Br. 4, 3, 8, 12.

— इम् (im RV. so v. a. निम्) einrichten, in Ordnung bringen; zurüsten, ausrüsten: इष्कर्ता विकृतं पुनः RV. 8, 20, 26. 1, 12. पन्था इष्कृतासः 7, 76, 2. इष्कृणुधं रश्ना श्रोत पिंशत 10, 53, 7. अरुं गुडुभ्यो अतिथिगमिष्करम् 48, 8. इष्कृत scheint auch RV. 1, 184, 3 hergestellt werden zu müssen, wo jetzt इष्कृत steht. — Vgl. इष्कर्तृ, इष्कृताकाव.

— उद् med. röcheln (?) P. 1, 3, 32, Sch.

— उप 1) Jmd Etwas zuführen, zukommen lassen: अल्पं वा वहु वा

पस्य श्रुतस्योपकरोति यः । तमपोहं गुरुं विद्याच्छ्रुतोपक्रियया तया ॥ M. 2, 149. न पूर्व गुरवे किंचिदुपकुर्वति 245. पोपकृत (मंस) 5, 32. किं ते भूयः प्रियमुपकरोतु पाकशासनः Vikr. 89, 1. — 2) Dienste thun, Gefälligkeiten erweisen: ते (भृत्याः) तु — प्राणैरप्युपकुर्वते PAÑKĀT. I, 93. अनुपकुर्वाण HIt. 37, 12. उपकुर्वतमत्यर्थम् BHATT. 8, 18. उपकर्तुम् RĪGA-TAR. 3, 36. उपकृतं भवेत् es würde ein Dienst erwiesen werden MBu. 1, 6117. उपकृतं वहु तत्र SĪH. D. 12, 13. भावन्निगधैरुपकृतमपि देय्यतां याति PAÑKĀT. I, 317. Mit dem loc. der Person: श्रोत्रिणैरुपकुर्वन् M. 8, 394. तयापि मय्युपकृतम् PAÑKĀT. 187, 13. गता नाशं तारा उपकृतमसाधाविव जने MRĀKH. 83, 6. mit dem gen.: शोचत्याश्वात्प्राभागाया न किंचिदुपकुर्वता । पुत्रेण R. 2, 83, 24. मित्राणामुपकुर्वाणो राज्यं रन्तितुमर्हसि R. 4, 38, 47. ते (भृत्याः) तु संमानितास्तस्य (राज्ञः) प्राणैरप्युपकुर्वते PAÑKĀT. I, 398. उपकृत्य तयोर्भयोः 381. आत्मनश्चोपकर्तुम् MECH. 99. यन्मोपकृतं शक्यं प्रतिकर्तुं न तन्मया R. 4, 32, 8. प्रथमोपकृतं मरुत्ततः ÇĀK. 160. — 3) hegen, pflegen; mit dem acc.: उपैनामितः कुर्वेमिहि ÇĀT. Br. 14, 1, 6, 21. fgg. धृष्ट्युधं तु पाञ्चाल्यमानोयं स्वं निवेशनम् । उपाकरोदस्वदेतोः MBu. 1, 6408. verehren (सेवने): हरिमुपकुरुते (stets med.) P. 1, 3, 32, Sch. धीर्विदप्रिकर्षेण येनोपक्रियते नरः RĪGA-TAR. 3, 311. — 4) sich an Etwas (dat.) machen, an Etwas gehen: मैथुनायोपक्रतुः (उपगमत्) GORR. 1, 38, 7. R. 1, 37, 3. — 5) überwältigen: श्रेणेनो वर्तिकामुपकुरुते (vgl. u. उद्) VOP. 23, 25. — 6) उपकृत am Ende eines comp. in gleichem Casusverh. mit dem vorang. Worte gaṇa कृतादि zu P. 2, 1, 59. — 7) उपस्कर med. a) hinzuthun, ergänzen (वाक्याध्याहारे) P. 6, 1, 139. VOP. 13, 4. उपस्कृतं वृत्ते SIDDH. K. 145, a, 12. — b) mit einer Zuthat versehen, उपस्कृत versehen mit, verbunden mit, begleitet von: स्नेहादिभिर्बलनुपस्कृताः SUÇA. 2, 188, 4. सितातपत्रव्यनैरुपस्कृतः Buṅ. P. 1, 11, 28. — c) bearbeiten, zubereiten, ausrüsten, schmücken: प्रादेशनात्रं भूमेस्तु यो दद्यादनुपस्कृतम् MBu. 13, 3333. राजतं चानुपस्कृतम् Silber, welches nicht künstlich bearbeitet ist, glattes Silber ohne Verzierungen (KULL.: = रेखादिगुणात्तराधानरहित) M. 5, 112. यथोपपन्नमनुपस्कृतं भवता MBu. 1, 778. आभिषेचनिकं चैव सर्वमेतदुपस्कृतम् R. 2, 79, 10. उपस्कृता कन्या SIDDH. K. 145, a, 11. शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः (कवयः) BHATT. 2, 12. Dieses ist das उपस्कर भूषणं und प्रतिपत्ति (Sch. = गुणात्तराधान) der Grammatiker (P. 6, 1, 137. 139. VOP. 13, 4). — d) sich um Jmd oder Etwas kümmern, sich Jmd oder Etwas zur Sage sein lassen P. 6, 1, 139. 1, 3, 32. VOP. 13, 4. mit dem acc. der Person: संपीडात्मानमार्यात्वाद्या काश्चिदुपस्कृतः MBu. 13, 5893. mit dem gen. der Sache P. 2, 3, 53. द्योदकस्योपस्कुरुते er sorgt für Brennholz und Wasser P., Sch. VOP. मा कस्यचिदुपस्कृताः BHATT. 8, 19. उपास्कृता राजेन्द्रावागमस्येह 149. — e) mit etwas Ungehörigem versehen, verderben, entstellen P. 6, 1, 139. VOP. 13, 4. उपस्कृतं भुङ्क्ते SIDDH. K. 145, a, 12. अनुपस्कृत unverdorben, unentstellt, einfach, schlicht: मोसम् (KULL.: = अविगतं पूतिगन्धादिरहितम्) M. 3, 257. द्योऽनुपस्कृतः (KULL.: = अविगर्हितः) प्रोक्ता योगधर्मः सनातनः 7, 98. ब्राह्मणार्थं गवार्थं वा देहत्यागोऽनुपस्कृतः mit keinen Nebenabsichten verknüpft (KULL.: = दृष्टप्रयोजनानपेक्षः) 10, 62. निरुपस्कृत = अनुपस्कृत schlicht, einfach, von einem Menschen MBu. 14, 1295. — f) versammeln P. 6, 1, 138. VOP. 13, 4. उपस्कृता ब्राह्मणाः । समुदिता इत्यर्थः SIDDH. K. 145, a, 11. — Vgl. उपकरण, उपकर्तृ, उपकार fgg., उपकृति, उपक्रिया, उपस्कर fgg.